बाणगंगा बेसिन में पर्यावरण अवसान की समस्या एवं समाधानः एक भौगोलिक विश्लेषण (दौसा जिले के सन्दर्भ में)

***डॉ. धर्मेन्द्र सिंह चौहान**
****मानसिंह मीना**

परिचयः

पर्यावरण का हमारे चारों ओर विस्तृत आवरण हैं जो अनेक तत्वों का सामूहिक नाम है मूलतः अभिप्राय प्राकृतिक पर्यावरण से है।[1] पर्यावरण एक अविभाज्य समष्टि है तथा भौतिक जैविक एवं सांस्कृतिक तत्वों वाले पारस्परिक क्रियाशील तत्वों से इसकी रचना होती है। ये तंत्र अलग–अलग तथा सामूहिक रूप से विभिन्न रूपों में परस्पर सम्बन्ध होते हैं भौतिक तत्व (स्थान, स्थलरूप, जलीय भाग, जलवायु, मृदा, शैल, खनिज) मानव निवास्य क्षेत्र की परिवर्तनशील विशेषताओं उसके सुअवसरों तथा प्रतिबन्धक अवस्थितियों को निश्चित करते हैं। जैविक तत्व (पौधे, जन्तु, सूक्ष्म–जीव, मानव) जीवमंडल की रचना करते हैं। सांस्कृतिक तत्व (आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक) मुख्य रूप से मानव निर्मित होते हैं तथा सांस्कृतिक पर्यावरण की रचना करते हैं।

पर्यावरण की इस आधारभूत संरचना के आधार पर इसको दो प्रमुख प्रकारों में विभक्त किया जाता है।

भौतिक पर्यावरण	जैविक पर्यावरण
↓	↓
1. स्थलमंडलीय पर्यावरण	इसकी संरचना पौधों तथा मानव सहित जन्तुओं द्वारा होती है।
2. वायुमंडलीय पर्यावरण	1. वानस्पतिक पर्यावरण
3. जलमंडलीय पर्यावरण	2. जन्तु पर्यावरण

पर्यावरण के संघटक में अजैविक संघटक (स्थल, वायु, जल), जैविक संघटक (पादप, मनुष्य, जन्तु), ऊर्जा संघटक में (सौर्य, भूतापीय ऊर्जा) को सम्मिलित किया जाता है।[2]

बाणगंगा नदीः यह नदी जयपुर जिले में विराटनगर तहसील की बैराठ पहाड़ियों से निकलकर पूर्व की ओर बहते हुए दौसा जिले में प्रवेश करती है। यह दौसा जिले में बसवा तहसील के गांव (भांकरी, गूलर, जलालपुर, मानपुर, पूँन्दरपाड़ा (दुलावा, सुग्याड़या) सिकराय तहसील (निकटपुरी, जोपाड़ा, करोड़ी, सुरैर, पाड़ली, ब्रह्मबाज, चांदेरा) महुवा तहसील (रसीदपुर, कमालपुरा, दुलापुरा, बड़ीन, हुड़ला, ग्वारकी) में बहने के बाद भरतपुर जिले में बहती है, इसके बाद उत्तर प्रदेश में इटावा के पास यमुना नदी में मिल जाती है।

इस नदी का जलग्रहण क्षेत्र 4900 वर्ग किमी के लगभग है, इस नदी से जिले के 54 बांध भरे जाते हैं, जिनकी कुल भराव क्षमता 2100 मिलियन क्यूबिक फुट है इसके द्वारा 2200 हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की जाती है। इसकी लम्बाई 380 किमी. है।[3]

घूमणा नहरः इस नहर से लाभान्वित गांवों की संख्या लगभग 150 है लेकिन मुख्यतः दौसा जिले के क्रमशः घूमणा, गढ़ी, बनेपुरा, जगरामपुरा, नामनेर, मोरेड़, मुड़ीखेड़ा, रामेड़ा कुडेला, सिकराय, गनीपुर, हीगवा, हींगी, चादूसा, लालपुर, सीमला, सुरैर, करौड़ी, गुर्जर सीमला, पिलोड़ी, खेड़ी, ब्रह्मबाज, चांदेरा, दांतली, इत्यादि गांव प्रमुख है। इसी नहर से करौली जिले के कुछ गांव क्रमशः आंतरहेड़ा, दांतली, सांकरवाड़ा, पाड़ला, बजैड़ा, नांगल, जेचड़ी, माचड़ी इत्यादि गांव भी लाभान्वित हैं।

पाटन गीजगढ़ नहरः यह दौसा जिले की दूसरी नहर परियोजना है। जिससे बूजेट, जयसिंहपुरा, पाटन, गीजगढ़ लाभान्वित हैं।

पर्यावरण अवसान की समस्या क्या है?

पर्यावरण अनवयन का अर्थ है– मानव कार्यों तथा प्राकृतिक प्रक्रमों द्वारा स्थानीय प्रादेशिक एवं विश्व स्तरों पर पर्यावरण की गुणवत्ता में ह्रास तथा अवनयन। जैसे ज्वालामुखी, उद्भेदन, स्थलखण्ड में उत्थान व अवतलन, वलन व भ्रंशन, वायुमंडलीय तूफान, बाढ़ व सूखा, प्राकृतिक कारणों से वनों में अग्नि का प्रकोप (दावानल), प्राकृतिक विद्युत विसर्जन, उपलवृष्टि, अति हिमपात, भौमिकीय अपरदन, भूमि स्खलन, आदि प्राकृतिक कारण हैं जिनके द्वारा स्थानीय एवं प्रादेशिक स्तरों पर पारिस्थितिक तत्वों में अव्यवस्था उत्पन्न हो जाने से पर्यावरण अवनयन प्रारम्भ हो जाता है।[4]

बाणगंगा बेसिन में पर्यावरण अवसान की समस्या के कारण

अवनलिका अपरदन–इस नदी में अपरदन की समस्या भी है जिसके कारण मृदा का तीव्रगति से ह्रास हो रहा है और पर्यावरण अवसान की समस्या पैदा हो रही है।[5]

कृषि उत्पादन बदलना–वर्तमान स्थिति में किसानों द्वारा कृषि उत्पादन बदलने से वह अनेक तरीकों से उत्पादन को बढ़ाना चाहता है जिससे पर्यावरण को हानि होती है।

भौम जल का गिरना–वर्तमान समय में क्षेत्र में भूमि जल स्तर बहुत अधिक मात्रा में गिर गया है। उसका कारण मानव द्वारा जल का अधिक दोहन है।[6]

संकर फसलों का उत्पादन व फसल चक्र बदलना एवं कीटनाशक का अधिक प्रयोग–बढ़ती हुई जनसंख्या दबाव के कारण वर्तमान समय में संकर बीजों का अधिक उत्पादन होने लगा है और फसल चक्र को बार–बार बदला जा रहा है जिससे कीटनाशक का अधिक प्रयोग बढ़ रहा है जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण को तीव्र क्षति हो रही है।

मानव औद्योगिक विकास व वनों की कटाई एवं बजरी खनन कार्य अधिक होना–वर्तमान युग में बढ़ती मांग के कारण उद्योगों का विकास हो रहा है और वनों की कटाई अधिक मात्रा में हो रही है जिससे वन नष्ट होते जा रहे हैं और इस नदी में बजरी खनने कार्य भी तीव्रगति से हो रहा है जिस कारण पर्यावरण को क्षति पहुँच रही है।[7]

बाढ़ व सूखा की स्थिति एवं भौमिकीय अपरदन की समस्या का होना–पिछले कुछ दशकों में वर्षा अधिक होती थी लेकिन वर्तमान समय में सामान्य से भी कम होती है। जिस कारण सूखा की स्थिति बनी हुई है और जलस्तर गिर रहा है भौम जल गिरने से अपरदन की समस्या भी बढ़ रही है।[8]

जैव विविधता का ह्रास–वर्तमान में जीवों की विविधता का भी ह्रास हो रहा है। जिससे पर्यावरण संतुलन का ह्रास हो रहा है।

पर्यावरण अवसान की समस्या से प्रभाव

नदी क्षेत्र में सिंचाई पर प्रभाव–इस पर्यावरण ह्रास की समस्या से इस क्षेत्र में वर्तमान समय में सिंचाई पर प्रभाव पड़ा है क्योंकि जल का अत्यधिक दोहन में एवं वर्षा भी कम होने से जल स्तर गिर गया है और सिंचाई भी ठीक से नहीं हो रही है।

नदी पेटे की फसलों पर प्रभाव एवं यहाँ निवास आदिम जनजातियों की जीवन शैली पर प्रभाव–बाणगंगा नदी के किनारे उत्पादित होने वाली फसलों पर भी प्रभाव पड़ा है क्योंकि यह इसी के जल पर आधारित थी जो वर्तमान में वर्षा न होने से पानी नहीं है और ये फसलें प्रभावित हैं। जिस कारण यहाँ निवास करने वाली आदिम जनजाति की जीवन शैली पर प्रभाव पड़ा है और ये लोग कृत्रिम चीजों का प्रयोग करने लगे हैं जिससे पर्यावरण को क्षति पहुँचती है।

जैव–विविधता एवं वन्य जीव–पर्यावरण पर प्रभाव–पर्यावरण ह्रास से जीवों की विविधता एवं उनकी जीवन शैली पर भी प्रभाव पड़ा है और उनका संरक्षण से भी बांधा उत्पन्न हुई है। जिससे पर्यावरण संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

संसाधनों के पुर्नभरण की समस्याएँ–पर्यावरण के ह्रास से संसाधन सीमित रह गए है और लोग अधिक है जिससे पुर्नभरण की समस्या पैदा हो रही है।

पर्यावरण पर मानव का प्रभाव–वर्तमान समय में बढ़ती हुई जनसंख्या दबाव के कारण अत्यधिक मात्रा में पर्यावरण पर मानव का प्रभाव है जिसमें मानव निर्माण तथा उत्खनन कार्य करने लगा है और मौसम के अनुसार फसल रूपान्तरण करता है और वर्तमान में भूमि का उपयोग भी बदलता जा रहा है जिस कारण पर्यावरण ह्रास की समस्या बढ़ती जा रही है।[9]

पर्यावरण अवसान की समस्या के समाधान

पारिस्थितिकी मित्रवत् प्रौद्योगिकी–पर्यावरण अवसान की समस्या के समाधान हेतु मानव के द्वारा ऐसी भावना जाग्रत की जानी चाहिए कि वे लोग पारिस्थितिकी में संतुलन बनाने का प्रयास करे और मित्रता जैसा व्यवहार करे।

उत्पादन का विकेन्द्रीकरण एवं परियोजना मूल्यांकन हो–मानव के द्वारा जो भी उत्पादन किया जाता है उसका ऐसा बंटवारा होना चाहिए कि प्रकृति को नुकसान नही हो और अपने दायरे में उत्पादन करे तथा जो पर्यावरण हेतु परियोजना बने उसका मूल्यांकन होना चाहिए।

संसाधन संरक्षण एवं पारिस्थितिक साक्षरता हो–संसाधन सर्वत्र सुलभ है और सीमित भी है अतः इनका बेहतर तरीके से सद्उपयोग हो और भावी पीढ़ी हेतु सुरक्षण भी आवश्यक है एवं लोगों को यह भी शिक्षा दी जानी चाहिए कि पारिस्थितिकी संतुलन कैसे बनाए रखना है जिससे पर्यावरण ह्रास को कम किया जा सके।

प्रभावी जवाबदेही तंत्र एवं स्थायी विकास पर प्रभावी जनमत निर्माण–मानव को पर्यावरण बचाने हेतु अच्छे ढंग का प्रशासन होना चाहिए जिससे लोगों में जागृति पैदा हो और सतत् विकास हेतु जनता का सहयोग लेना आवश्यक है क्योंकि जनमत ही प्रभावी हो सकता है।

संसार के देशों का पर्यावरण के सम्बन्ध में संधियों एवं प्रोटोकाल का अनुपालन होना–विश्व स्तर पर पर्यावरण बचाव हेतु अनेकों समझौते होते हैं जो पर्यावरण बचाव के कुछ नियम बताते हैं और जनता से आग्रह करते हैं इस कारण इन सभी का प्रभावी ढंग से पालन होना चाहिए।[10]

***निर्देशक (विभागाध्यक्ष), भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर**

****शोधार्थी, भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर**

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सक्सेना, डॉ. हरिमोहन; "राजस्थान का भूगोल", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ. 291.
2. ओझा, एस.के.; "पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण", पृ. 9, 10.
   सिंह, सविन्द्र; "भौतिक भूगोल", पृ. 546.
3. सक्सेना, डॉ. हरिमोहन; "राजस्थान का भूगोल", पृ. 32.
4. ओझा, एस.के.; "पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण", पृ. 147.
5. सिंह, सविन्द्र; "भौतिक भूगोल", पृ. 204.
6. सिंह, सविन्द्र; "भौतिक भूगोल", पृ. 256.
7. सक्सेना, डॉ. हरिमोहन; "राजस्थान का भूगोल", पृ. 304.
8. सक्सेना, डॉ. हरिमोहन; "राजस्थान का भूगोल", 296.
9. सक्सेना, डॉ. हरिमोहन; "राजस्थान का भूगोल", 304.
10. ओझा, एस.के.; "पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण", पृ. 19, 20.